अध्याय 16

प्रायश्चित का दिन

शुद्धता और अशुद्धता से संबंधित नियमों के खण्ड (अध्याय 11-15) के बाद, लैव्यव्यवस्था में प्रायश्चित के दिन से संबंधित निर्देश दिए गए हैं। यह कोई संयोग नहीं होगा कि यह अध्याय पुस्तक के मध्य[1] के निकट है और क्योंकि लैव्यव्यवस्था पेन्टाट्यूक की तीसरी पुस्तक है, इसलिए यह व्यवस्था के मध्य में है। लैव्यव्यवस्था 16 में जिस विषय को लिया गया है वह तोरह में दी गई छुटकारे की पद्धति का मर्म है। इस दिन के महत्व, और इससे संबंधित नियमों पर इस अध्याय की अंतिम आयत में बल दिया गया है, जिसमें घोषणा की गई है कि जो कुछ अभी प्रकट किया गया है उसे इस्राएलियों के लिए "सदा की विधि" होना था (16:34)।

प्रायश्चित का दिन वास्तव में "सदा की विधि" हो गया। यथार्थ में वह "यहूदी कैलेण्डर का सबसे गंभीर दिन" बन गया।[2] यद्यपि पुराने नियम की ऐतिहासिक पुस्तकों में इसके मनाए जाने का उल्लेख नहीं है, प्रमाण संकेत करते हैं कि अपने समस्त इतिहास में यहूदी इसे मनाते रहे हैं।[3] आज इसे इसके इब्रानी नाम *योम किप्पूर* से जाना जाता है। यह दिन अनुपम था; यह एकमात्र अवसर था जिस दिन निवास-स्थान के पवित्र स्थान में किसी भी मनुष्य को प्रवेश करने की अनुमति थी। महापवित्र स्थान में उसका प्रवेश इस अध्याय में पाए जाने वाले नियमों द्वारा प्रतिबंधित था।

इस अध्याय के सन्देश को आज हमें आकर्षित करना चाहिए। यह "प्रायश्चित," पापों की क्षमा के विषय में है (16:34)। लैव्यव्यवस्था 16 में "प्रायश्चित" के लिए प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द पन्द्रह बार आया है, जो इब्रानी शब्द כָּפַר *(कपार)* का अनुवाद है, जिसका अर्थ होता है "ढाँप देना, प्रायश्चित करना, अनुकूल बनाना, शान्त करना।"[4] प्रायश्चित के दिन, इस्राएल के पाप "ढाँप" दिए जाते थे; अर्थात वे धो दिए या हटा दिए जाते थे।

यद्यपि प्रायश्चित के दिन के विषय में जानकारी आज हम पर सीधे से लागू नहीं होती है परन्तु यह संकेत अवश्य प्रदान करती है कि जब क्षमा या ढाँपना खोज रहे हों तो कहाँ देखें। जैसे कि परमेश्वर ने इस्राएल को "प्रायश्चित का दिन" दिया, परमेश्वर हमें भी प्रायश्चित का एक "दिन" देता है - एक ऐसा दिन जिस में हम प्रायश्चित पा सकते हैं।

इस अध्याय का आयोजन व्यवस्थित रीति से है, सबसे पहले नियमों के दिए जाने की परिस्थिति लिखी गई है। इसके उपरान्त, कौन से बलिदान चढ़ाए जाने हैं प्रकट करने के द्वारा यहोवा ने लोगों को नियमों के लिए तैयार किया। फिर उसने

वर्णन किया कि महायाजक, लोगों, और निवास-स्थान के लिए प्रायश्चित कैसे किया जाना है। अन्त में प्रत्येक इस्राएली के लिए व्यक्तिगत रीति से बताया गया कि उन्हें प्रायश्चित के दिन में क्या करना है, और यहोवा ने घोषित किया कि ये नियम सदा की विधि ठहरेंगे।

नियमों के लिए व्यवस्था (16:1)

[1]जब हारून के दो पुत्र यहोवा के सामने समीप जाकर मर गए, उसके बाद यहोवा ने मूसा से बातें कीं।

इस अध्याय का पहला वाक्य आगे आने वाले प्रकाशन की ऐतिहासिक परिस्थिति उपलब्ध करवाता है।

आयत 1. यहोवा ने ये नियम तब दिए जब **हारून के दो पुत्र यहोवा के सामने समीप जाकर मर गए**। विषय नादाब और अबीहू का है, जिन्हें **यहोवा** ने मार डाला क्योंकि उन्होंने उसके सम्मुख "ऊपरी आग" अर्पित की (10:1, 2)। लैव्यव्यवस्था 16:2 स्पष्ट कर देता है कि यहाँ दिए गए नियमों का उद्देश्य, (कुछ भाग में) याजकों की सहायता करने के लिए था कि वे नादाब और अबीहू के समान गलती न करें और परिणामस्वरूप अपने जीवन न गँवा दें।

इसमें बुद्धिमता थी कि परमेश्वर उस समय ऐसे नियम देता जो इस दुर्घटना के पुनः घटित होने से बचाव करते। परन्तु, यदि ये नियम अध्याय 10 में दर्ज की गई घटनाओं के तुरंत बाद दिए गए, तो इससे पहले कि लेखक घटनाओं के ऐतिहासिक क्रम पर लौट कर आता, व्यवस्था के पाँच अध्याय बीच में क्यों दिए गए?

इस प्रश्न के लिए विभिन्न उत्तर दिए जा सकते हैं, परन्तु यह समझना महत्वपूर्ण है कि लेख यह न तो कहता है और न ही सुझाता है कि अध्याय 11 से लेकर 15 तक के नियम अध्याय 10 की घटनाओं के पश्चात दिए गए थे। इसलिए, ऐसा मान लिए जाने में कोई समस्या नहीं है कि लेखक द्वारा सामग्री का प्रबंधन एक तार्किक या मनोवैज्ञानिक आधार पर है न कि ऐतिहासिक और क्रमवार नमूने पर।

संभवतः प्रायश्चित का दिन पिछले पाँच अध्यायों में देखे गए विषयों के लिए चरमोत्कर्ष प्रदान करता था। अध्याय 11 से लेकर 15 तक इस्राएलियों (और उनके सामान) से व्यक्तिगत रीति से अशुद्धता को दूर करने से संबंधित हैं; अध्याय 16 सारे राष्ट्र के प्रायश्चित, और उसके लोगों के पाप के कारण उनपर आए दोष को दूर किए जाने के संबंध में है। शुद्धता से संबंधित नियम संभवतः अध्याय 10 और 16 के बीच में इस बात पर बल देने के लिए डाले गए कि वर्ष का एक दिन था जिसमें समस्त इस्राएल शुद्ध होकर यहोवा के सम्मुख धर्मी ठहरा कर खड़ा किया जा सकता था।

उस दिन का पूर्वावलोकन (16:2-10)

परमेश्वर के नियमों का आरंभ उस दिन के पूर्वावलोकन के साथ हुआ जिस दिन का वह वर्णन कर रहा था और बल दे रहा था कि उस दिन क्या चढ़ावे चढ़ाने हैं।

महापवित्र स्थान में प्रवेश से संबंधित सावधानियां (16:2)

2और यहोवा ने मूसा से कहा: "अपने भाई हारून से कह कि सन्दूक के ऊपर के प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे, बीचवाले परदे के अन्दर, पवित्रस्थान में हर समय न प्रवेश करे, नहीं तो मर जाएगा; क्योंकि मैं प्रायश्चित्तवाले ढकने के ऊपर बादल में दिखाई दूँगा।"

आयत 2. हारून के पुत्रों में से दो अभी मार डाले गए थे, कुछ सीमा तक संभवतः इसलिए क्योंकि वे वहाँ तक गए जहाँ उन्हें जाना नहीं चाहिए था: "यहोवा के सामने समीप जाकर मर गए" (16:1)। हो सकता है कि वे महापवित्र स्थान में चले गए हों, और साथ ही "ऊपरी आग" भी अर्पित की थी। ऐसा उन्होंने किया हो या नहीं, हारून और उसके बाद आने वाले याजकों को सचेत किया जाना था कि बिना आमंत्रण मिले महापवित्र स्थान में प्रवेश करने का - जहाँ परमेश्वर रहता था - अर्थ था मृत्यु! याजकीय परिवार ने अभी परमेश्वर के निर्देशों की अवहेलना करने के परिणामों के नमूने को देख लिया था।

यदि वे इस विषय में परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते, तो प्रत्यक्षतः परिणाम होता मृत्यु। यह उनके द्वारा बिना अनुमति के यहोवा के दर्शन को देखने के कारण, जब वह **प्रायश्चित्तवाले ढकने के ऊपर बादल में दिखाई** देगा होगा। क्योंकि कोई मनुष्य अपनी स्वाभाविक दशा में यहोवा को देखने के पश्चात जीवित नहीं रह सकता था (निर्गमन 33:20; देखें यूहन्ना 1:18; 1 तीमु. 6:13-16; 1 यूहन्ना 4:12)।

इब्रानी लेख के शाब्दिक अनुवाद को करते हुए NASB कहती है कि, "हारून को पर्दे के अन्दर पवित्र स्थान में किसी भी समय प्रवेश" नहीं करना था। स्पष्ट रीति से यह "पवित्र स्थान" महापवित्र स्थान था जिसमें वाचा का **सन्दूक** था, जिसके ऊपर "प्रायश्चित वाला ढक्कन था।" इस खण्ड से ऐसा प्रतीत होता है कि याजक को कभी भी महापवित्र स्थान में प्रवेश करना वर्जित था। किन्तु क्योंकि अध्याय आगे चल कर प्रति वर्ष में एक बार उसके प्रवेश की अनुमति देता है, इसलिए यह वर्जित करने का अर्थ कुछ इस प्रकार होगा: "वह अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी समय प्रवेश नहीं करेगा, उसे परमेश्वर द्वारा चुने गए दिन में ही प्रवेश करना था।"[5]

"प्रायश्चित वाला ढक्कन" जिसके विषय में आयत 2 में कहा गया है सोने की एक पटिया था, जो $2^1/_2$ हाथ लंबी और $1^1/_2$ हाथ चौड़ी थी, और वाचा के सन्दूक के ऊपर महापवित्र स्थान में रखी रहती थी। प्रायश्चित वाले ढक्कन के दोनों छोरों पर दो करूब थे (निर्गमन 25:17-21; 37:6-9)। क्योंकि यहोवा मूसा से इन

करूबों के बीच में से होकर बात करता था (निर्गमन 25:22; 30:6; गिनती 7:89), इसलिए प्रायश्चित वाले ढक्कन को कभी-कभी परमेश्वर की चौकी या सिंहासन भी माना जाता था (भजन 99:1, 5; 132:7)।

इब्रानी शब्द כַּפֹּרֶת *(कप्पोरेथ)*, जिसका अनुवाद "प्रायश्चित का ढक्कन" हुआ है, का अर्थ विवादास्पद है। एक मत है कि यह "ढांपना" अर्थ रखने वाले शब्द से आता है, इसलिए इसका अर्थ है "पापों के ढाँपने का स्थान।" एक और मत है कि यह ऐसे शब्द से आया है जिसका अर्थ है "मिटा कर साफ़ कर देना" या "प्रायश्चित करना" और, इसलिए, इसका अर्थ है "प्रायश्चित का स्थान।" इब्रानी शब्द ἱλαστήριον *(हिलास्टेरियौन)* को LXX "तुष्टिकरण का स्थान" या "तुष्टिप्रद" अनुवाद करता है (देखें रोमियों 3:25)।[6]

चढ़ावों के लिए तैयारियां (16:3-5)

[3]"जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब इस रीति से प्रवेश करे, अर्थात् पापबलि के लिये एक बछड़े को और होमबलि के लिये एक मेढ़े को लेकर आए। [4]वह सनी के कपड़े का पवित्र अंगरखा, और अपने तन पर सनी के कपड़े की जाँघिया पहने हुए, और सनी के कपड़े का कटिबन्ध, और सनी के कपड़े की पगड़ी भी बाँधे हुए प्रवेश करे; ये पवित्र वस्त्र हैं, और वह जल से स्नान करके इन्हें पहिने। [5]फिर वह इस्राएलियों की मण्डली के पास से पापबलि के लिये दो बकरे और होमबलि के लिये एक मेढ़ा ले।"

हारून को परमेश्वर की उपस्थिति में अपनी ही इच्छानुसार (संभवतः प्रायश्चित करने के उद्देश्य से) प्रवेश करने के परिणामों के विषय में सचेत करने के पश्चात, यहोवा ने, प्रायश्चित के दिन के लिए प्रति वर्ष क्या किया जाना था विस्तार से बता कर उसे तैयार किया। इसके आगे की कई आयतें चढ़ावों के पूर्वावलोकन के विषय में हैं। इसके बाद की आयतें उन चढ़ावों को अधिक विस्तार से बताती हैं।

आयतें 3-5. परमेश्वर के निर्देश यह बताने के साथ आरंभ होते हैं कि **हारून** (महायाजक) को बलिदान के लिए क्या ले कर आना था: **पापबलि के लिये एक बछड़े को और होमबलि के लिये एक मेढ़े को लेकर आए** (16:3)। निःसंदेह उसे इन बलिदानों के लिए दाम स्वयं चुकाने थे। व्यवस्था इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि महायाजक अपने लिए प्रायश्चित करने के बाद ही लोगों के लिए प्रायश्चित कर सकता था। आयत 3 उस स्थान के विषय में भी बताती है जहाँ याजक को **प्रवेश** करना था: **पवित्रस्थान**, अर्थात निवास-स्थान, और संभवतः यहाँ केवल तम्बू के अन्दर के पवित्र-स्थान को ही नहीं वरन मिलाप-वाले तम्बू के संपूर्ण क्षेत्र को लिया गया है।

यहोवा ने प्रायश्चित के दिन की सेवकाई के लिए याजक ने जो वस्त्र पहनने थे उनका वर्णन किया। वे पेंटाट्यूक में अन्य स्थान पर दी गई विस्तृत महा-याजकीय वर्दी के भाग नहीं थे। वरन, यह कहा जा सकता है कि वे उसके "कार्य करने के वस्त्र"

थे। वे साधारण, स्वच्छ, और कार्यात्मक थे: वे **सनी के कपड़े का ... अंगरखा, सनी के कपड़े की जाँघिया, सनी के कपड़े का कटिबन्ध, और सनी के कपड़े की पगड़ी** थे (16:4)। परमेश्वर ने स्पष्ट किया कि महायाजक को इन कपड़ों को पहनने से पहले **स्नान** करना था, निःसंदेह उसकी विधिगत शुद्धता को सुनिश्चित करने के लिए। यद्यपि ये उनकी आधिकारिक वर्दी जैसे प्रभावशाली तो नहीं थे, फिर भी वे **पवित्र वस्त्र** थे।

व्याख्याकर्ताओं ने महायाजक के सामान्य वस्त्रों के, जो राजा के योग्य थे, और इस साधारण परिधान में, जिनमें वह सेवक के समान अधिक प्रतीत होता था, मध्य की तुलना पर ध्यान किया है। उन्होंने सुझाव दिया है कि, क्योंकि उसे परमेश्वर की उपस्थिति में प्रस्तुत होना था, इसलिए यह अधिक उपयुक्त था कि वह सेवक के रूप में यहोवा के सम्मुख आए। उसे, अपने तथा राष्ट्र के लिए क्षमा याचना के लिए, परमेश्वर के निकट दीनता के साथ जाना था न कि घमंडपूर्वक।

इसके पश्चात लेख प्रकट करता है कि लोगों को (साथ ही याजक को भी) बलिदान के लिए पशुओं को उपलब्ध करवाना था। जो चाहिए थे वे थे, **पापबलि के लिये दो बकरे और होमबलि के लिये एक मेढ़ा ले** (16:5)।

चढ़ावों को प्रस्तुत करना (16:6-10)

6"और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा चढ़ाकर अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे। 7और उन दोनों बकरों को लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने खड़ा करे; 8और हारून दोनों बकरों पर चिट्ठियाँ डाले, एक चिट्ठी यहोवा के लिये और दूसरी अज़ाज़ेल के लिये हो। 9और जिस बकरे पर यहोवा के नाम की चिट्ठी निकले उसको हारून पापबलि के लिये चढ़ाए; 10परन्तु जिस बकरे पर अज़ाज़ेल के लिये चिट्ठी निकले वह यहोवा के सामने जीवित खड़ा किया जाए कि उस से प्रायश्चित्त किया जाए, और वह अज़ाज़ेल के लिये जंगल में छोड़ा जाए।"

आयतें 6-10. यहोवा ने विस्तृत निर्देश दिए कि बलिदान चढ़ाते समय क्या होना चाहिए। ऐसा करने के पाँच क्रम थे। पहले, महायाजक को **पापबलि के बछड़े को ... अपने लिये चढ़ाना था** (16:6)। दूसरे, लोगों के पाप बलि के लिए वह **दोनों बकरों** को लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर **यहोवा के सामने** खड़ा करे (16:7)। तीसरे, महायाजक को चिट्ठियाँ डालनी थीं यह निर्धारित करने के लिए कि कौन सा बकरा **यहोवा के लिये** और कौन सा **अज़ाज़ेल** होगा (16:8)। चौथे, जो **बकरा यहोवा के लिए** हो उसे **पापबलि कर के चढ़ाना** था (16:9)। पाँचवें, दूसरे **बकरे** को **यहोवा के सामने जीवित खड़ा करना था**; और फिर **उससे प्रायश्चित किए जाने के लिए** उसे **जंगल में अज़ाज़ेल के लिये छोड़ देना था** (16:10)। इन क्रमों से संबंधित अतिरिक्त बातें आगे दी गई हैं।

प्रायश्चित करना (16:11-28)

खण्ड का ध्यान उस दिन की गतिविधियों के पूर्वावलोकन से प्रायश्चित के दिन याजक द्वारा चढ़ाए जाने वाले बलिदान के लिए पालन करने के नियमों की ओर मुड़ता है। इन चढ़ावों के विषय में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात है कि उन्हें याजक और उसके घराने के लिए भी चढ़ाया जाना था, उसके पश्चात ही लोगों और मिलापवाले तम्बू और उसकी सामग्री के लिए। इन सबके लिए प्रायश्चित करना था, उन्हें शुद्ध और पवित्र करना था।

महायाजक और उसके घराने के लिए प्रायश्चित (16:11-14)

11"हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा समीप ले आए,
और उसको बलिदान करके अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे। 12और
जो वेदी यहोवा के सम्मुख है उस पर के जलते हुए कोयलों से भरे हुए धूपदान को
लेकर, और अपनी दोनों मुट्ठियों को कूटे हुए सुगन्धित धूप से भरकर, बीचवाले
परदे के भीतर ले आकर 13उस धूप को यहोवा के सम्मुख आग में डाले, जिससे धूप
का धुआँ साक्षीपत्र के ऊपर के प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर छा जाए, नहीं तो वह
मर जाएगा; 14तब वह बछड़े के लहू में से कुछ लेकर पूर्व की ओर प्रायश्चित्त के
ढकने के ऊपर अपनी उंगली से छिड़के, और फिर उस लहू में से कुछ उंगली के द्वारा
उस ढकने के सामने भी सात बार छिड़क दे।"

आयत 11. महायाजक को आरंभ करना था **पापबलि ... अपने और अपने घराने के लिए** के साथ। विचार यह प्रतीत होता है कि वह महायाजक जो पाप से दूषित था वह परमेश्वर के सम्मुख परमेश्वर के लोगों की क्षमा के लिए उपस्थित नहीं हो सकता था। इसलिए उसे पहले यह निश्चित करना था कि उसके अपने पाप क्षमा हो गए हैं। केवल तब ही वह जिन लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहा था उनकी क्षमा के लिए आवश्यक बलिदान चढ़ा सकता था।

महायाजक के लिए **बछड़े** के पापबलि चढ़ाए जाने का आरंभ वैसे ही होता, जैसे कि अन्य पापबलियाँ होती थीं, आराधक द्वारा बछड़े को मिलापवाले तम्बू तक लाना, जहाँ उसे याजक द्वारा वध किया जाना था। क्योंकि यहाँ आराधक याजक था, वह बछड़े को लेकर भी आता और उसे वध भी करता।

आयतें 12, 13. इसके पश्चात अनुष्ठान के लिए आवश्यक था कि महायाजक यहोवा के सम्मुख की **वेदी** पर से याजक **जलते हुए कोयलों से भरे हुए धूपदान** को लेकर, और अपनी **दोनों मुट्ठियों को कूटे हुए सुगन्धित धूप**[7] से भरकर मिलापवाले तम्बू में आए। वहाँ वह **सुगन्धित धूप** को धूप की वेदी के जलते हुए कोयलों पर डाले। इसका परिणाम होगा कि महापवित्र स्थान का भीतरी भाग धूप की वेदी से उठने वाले धुएं के **बादल** से भर जाएगा। केवल जब धुआँ सन्दूक के ऊपर छा जाता तब ही महायाजक को महापवित्र स्थान में प्रवेश करना था। यदि वह धुएं के

प्रायश्चित वाले ढकने पर छा जाने से पहले प्रवेश करता तो **मर** जाता। प्रत्यक्षतः धूप का धुआँ परमेश्वर की उपस्थिति को ढांपने के लिए था।[8] एक बार फिर, पाठक को बाइबल का यह तथ्य स्मरण करवाया गया है कि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर को देखकर जीवित नहीं रह सकते है।

आयत 14. एक बार महापवित्र स्थान में धुआँ भर जाता, तब महायाजक उसमें प्रवेश करता, अपने साथ **बछड़े के लहू** को लिए हुए। फिर उसे **अपनी उंगली** से लहू को **सात बार** सन्दूक के ऊपर के **प्रायश्चित के ढकने** पर और **प्रायश्चित के ढकने के सामने** की वायु में **छिड़के**। ऐसा करने से, वह अपने तथा अपने घराने के लिए प्रायश्चित करता।

लोगों के लिए प्रायश्चित और मिलापवाले तम्बू के लिए (16:15-19)

[15]"फिर वह उस पापबलि के बकरे को जो साधारण जनता के लिये होगा बलिदान करके उसके लहू को बीचवाले परदे के भीतर ले आए, और जिस प्रकार बछड़े के लहू से उसने किया था ठीक वैसा ही वह बकरे के लहू से भी करे, अर्थात् उसको प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर और उसके सामने छिड़के। [16]और वह इस्राएलियों की भाँति भाँति की अशुद्धता, और अपराधों, और उनके सब पापों के कारण पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित्त करे; और मिलापवाला तम्बू जो उनके संग उनकी भाँति भाँति की अशुद्धता के बीच रहता है उसके लिये भी वह वैसा ही करे। [17]जब हारून प्रायश्चित्त करने के लिये पवित्रस्थान में प्रवेश करे, तब से जब तक वह अपने और अपने घराने और इस्राएल की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करके बाहर न निकले तब तक कोई मनुष्य मिलापवाले तम्बू में न रहे। [18]फिर वह निकल कर उस वेदी के पास जो यहोवा के सामने है जाए और उसके लिये प्रायश्चित्त करे, अर्थात् बछड़े के लहू और बकरे के लहू दोनों में से कुछ लेकर उस वेदी के चारों कोनों के सींगों पर लगाए। [19]और उस लहू में से कुछ अपनी उंगली के द्वारा सात बार उस पर छिड़ककर उसे इस्राएलियों की भाँति भाँति की अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र करे।"

अपने लिए पापबलि चढ़ाने के पश्चात, महायाजक को लोगों तथा मिलापवाले तम्बू के लिए पापबलि चढ़ानी थी।[9]

आयत 15. बछड़े के लहू को छिड़कने के पश्चात, महायाजक मिलापवाले तम्बू से निकल जाता और फिर **पापबलि के बकरे को जो साधारण जनता के लिये होगा बलिदान** करता। दो बकरे प्रस्तुत किए गए थे; चिट्ठी डालने के द्वारा निर्धारित किया गया था कि उनमें से कौन सा "यहोवा के लिए" था (16:9) और कौन सा अज़ाज़ेल के लिये (16:10)। जो "यहोवा के लिए" था उसे यहाँ "जनता के लिए" कहा गया है, क्योंकि वह पापबलि बना। इसी क्रियाविधि के पालन के लिए **बछड़े के लहू** को चढ़ाने की आवश्यकता थी, महायाजक को महापवित्र स्थान में प्रवेश करना था, जहाँ वह बकरे के **लहू** को **प्रायश्चित के ढकने के ऊपर और उसके सामने**

छिड़क कर लोगों के लिए प्रायश्चित करता (देखें 16:17)।

इस्राएल के पापों से दो प्रकार से व्यवहार किया गया - बकरे के बलिदान के द्वारा और जंगल में छोड़े गए बकरे के द्वारा। यह व्यर्थ प्रतीत हो सकता है। क्या इस्राएल के पापों को हटाने के लिए एक ही बकरा पर्याप्त नहीं होता? एंड्रयू एच. ट्रोटर, जूनियर, ने इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से दिया:

> बलिदानों का सांकेतिक महत्व इतना विस्तृत है कि यह समझने के लिए कि परमेश्वर द्वारा पाप के साथ उसके व्यवहार को हमें समझाने के लिए तीन भिन्न क्रियाओं की आवश्यकता थी। पहले बकरे का बलिदान स्पष्टतः दिखाता है कि पाप के अपराध के लिए मृत्यु दण्ड की आवश्यकता थी (यहेज. 18:4)। दूसरे बकरे को पापों को अपने सर पर लिए हुए जंगल में भेजना इस बात पर बल देता है कि पापों को व्यक्ति और समाज से इतना दूर कर दिया जाएगा "उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है" (भजन 103:12)। बलिदान का तब तक जलाया जाना जब तक कि वह भस्म न हो जाए, पाप पर परमेश्वर के बल को दिखाता है, उसे पूर्णतयः नाश कर देना जिससे वह प्रार्थी को फिर परेशान न कर सके।[10]

आयत 16. लेख आगे कहता है कि बकरे का लहू **पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित्त** करता था। यह इस्राएलियों की **भाँति भाँति की अशुद्धता, और अपराधों, और उनके सब पापों के कारण** आवश्यक था। इस बलिदान को चढ़ाने के द्वारा और उसके लहू को आज्ञानुसार छिड़कने के द्वारा, याजक **निवास-स्थान**, और मिलापवाले तम्बू को शुद्ध करता था। लोगों के मध्य में होने भर से परमेश्वर के निवास का पवित्र स्थान **उनकी अशुद्धताओं** के द्वारा घिरा और दूषित हो जाता था।

जिस प्रकार किसी कोढ़ी की अशुद्धता और किसी व्यक्ति के असामान्य स्राव के कारण हुई अशुद्धता उनके द्वारा छूई गई वस्तुओं पर आ जाती थी, उसी प्रकार लोगों के पाप (समस्त) भी मिलापवाले तम्बू पर, जिसे वे उसके चारों ओर रहने और उसमें आराधना करने के द्वारा "छू" लेते थे, स्थानांतरित हो जाते थे। इसलिए इस्राएलियों के कोई भी पाप उस "पवित्रस्थान" और मिलापवाले तम्बू को अशुद्ध कर देते थे। जब लोगों के लिए पापबलि प्रायश्चित करती थी, तो उनके पाप क्षमा हो जाते थे; और जब ऐसा होता, तब परमेश्वर के निवास-स्थान से अशुद्धता का अँधेरा भी उठ जाता।

आयत 17. इस जानकारी के साथ एक प्रकार का पश्चलेख जोड़ा गया है। यहोवा ने 16:2 में पहले ही कह दिया था कि महायाजक को "पवित्रस्थान" के अन्दर जाना है। क्योंकि आयत में "परदे के अन्दर" आया है इसलिए यह महापवित्र-स्थान है। वहाँ पर महायाजक को **अपने और अपने घराने और इस्राएल की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त** करना था (देखें 16:6, 11, 15, 16)। यहाँ 16:17 में परमेश्वर ने कहा कि महायाजक को **पवित्रस्थान** में अकेले प्रवेश करना था, जो परमेश्वर के रहने के स्थान की पवित्रता के प्रति फिर से बल देता है। केवल एक ही व्यक्ति को परमेश्वर की उपस्थिति में आने की अनुमति थी, और वह प्रवेश (पाठक

आगे चलकर इसे 16:34 में सीखेंगे), लोगों के पाप के लिए प्रायश्चित करने के लिए, केवल वर्ष में एक बार था।

आयतें 18, 19. जब महायाजक बकरे के लहू के छिड़कने के कार्य को पूरा कर लेता, तब उसे महापवित्र स्थान से बाहर निकल कर **उस वेदी के पास जो यहोवा के सामने है** आ जाना था, ताकि **उसके लिये प्रायश्चित्त करे**। यह "वेदी" आँगन में रखी धूप की वेदी थी या होमबलि की वेदी यह विवादास्पद है; दोनों के लिए ही "यहोवा के सामने" कहा जा सकता था। संभावना होमबलि की वेदी के होने की अधिक है। अन्ततः, धूप की वेदी मिलापवाले तम्बू में थी, और जो प्रायश्चित मिलापवाले तम्बू के लिए किया जाता उसमें संभाव्यता उसके अन्दर का सब कुछ सम्मिलित होता।

अभिप्राय चाहे जिस वेदी से हो, दोनों **बछड़े** और **बकरे** के **लहू** को वेदी के **चारों कोनों के सींगों पर** लगाया जाना था। इसके अतिरिक्त, उसे वेदी पर **सात बार** छिड़का जाना था जिससे कि वह इस्राएली लोगों की **अशुद्धता** से **शुद्ध** और **पवित्र** हो। फिर से, वेदी की पापमय लोगों से निकटता, और इस तथ्य का, कि उसे पिछले महीनों में बहुतेरे पापों के प्रायश्चित के लिए उपयोग किया गया था, तात्पर्य था कि वह इस्राएलियों की पापमय दशा द्वारा दूषित अथवा अशुद्ध हो गई थी। स्थानांतरित की गई अशुद्धता को हटाने के लिए लहू की आवश्यकता थी।

अज़ाज़ेल की रीति: राष्ट्र के पापों का हटाया जाना (16:20-22)

[20]"जब वह पवित्रस्थान और मिलापवाले तम्बू और वेदी के लिये प्रायश्चित्त कर चुके, तब जीवित बकरे को आगे ले आए; [21]और हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर इस्राएलियों के सब अधर्म के कामों, और उनके सब अपराधों, अर्थात् उनके सारे पापों को अंगीकार करे, और उनको बकरे के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य के हाथ जो इस काम के लिये तैयार हो जंगल में भेजके छुड़वा दे। [22]वह बकरा उनके सब अधर्म के कामों को अपने ऊपर लादे हुए किसी निर्जन स्थान में उठा ले जाएगा; इसलिये वह मनुष्य उस बकरे को जंगल में छोड़ दे।"

दिन की गतिविधियों का चरमोत्कर्ष राष्ट्र के पापों को जीवित बकरे, "अज़ाज़ेल" पर स्थानांतरित करने और उसे जंगल में छोड़ देने के समय होता था।

आयत 20. इस परिच्छेद का आरंभ अभी तक इन बलिदानों के विषय में जो भी वर्णन किया गया था उसके उल्लेख के साथ होता है। आयतें 15 से लेकर 17 तक **पवित्रस्थान** और **मिलापवाले तम्बू** के लिए प्रायश्चित के विषय में हैं; आयतें 18 और 19 **वेदी** के प्रायश्चित के विषय में हैं। जब महायाजक **प्रायश्चित** के अनुष्ठान पूरे कर लेता, तब **जीवित बकरे** को चढ़ाया जाना था। यद्यपि शब्द **चढ़ाए** प्रयोग किया गया है, "जीवित बकरा" जीवित ही रहता था; उसे वध किए बिना छोड़ दिया जाता।

आयतें 21, 22. इस चढ़ावे का निर्णायक कार्य इसके बाद समझाया गया है: महायाजक को **अपने दोनों हाथों को** जीवित बकरे के **सिर पर** रखकर **इस्राएलियों के सब अधर्म के कामों, और उनके सब अपराधों, अर्थात् उनके सारे पापों का अंगीकार** करना था। इस प्रकार वह सांकेतिक रीति से उन पापों को बकरे पर डाल देता था। फिर वह बकरा **उनके सब अधर्म के कामों को अपने ऊपर लादे हुए** किसी **जंगल के स्थान** में चला जाता था।

इसे 8 और 10 आयत में "अज़ाज़ेल" कहा गया है। इब्रानी शब्द, עֲזָאזֵל *(अज़ाज़ेल)* जिसका अनुवाद "बलि का बकरा" हुआ है, उसका शब्दार्थ है "संपूर्ण हटा देना।"[11] इस शब्द के कई अर्थ संभव हैं।[12] पहले अनुवाद "अज़ाज़ेल" के समतुल्य शब्द का प्रयोग करते थे,[13] जिससे यह विचार आता था कि किसी निर्दोष को औरों के कर्मों का दोष और दण्ड उठाना पड़ता था। इस्राएल के पाप हटाकर निर्दोष बकरे पर डाल दिए जाते थे, जो फिर दोषी होकर उनके दोषों के लिए दण्ड भोगता था।[14]

एक अन्य दृष्टिकोण है कि यह शब्द "अज़ाज़ेल" एक संज्ञा है जो निर्जन स्थान की एक दुष्टात्मा (या मुख्य दुष्टात्मा) के लिए है।[15] यदि ऐसा है तो बकरे को पापों को वापस वहीं ले जाते हुए देखा जाएगा, जहाँ से वे आए थे।[16] यह विचार असंभावित है, क्योंकि यह दुष्टात्माओं को सच्चे परमेश्वर के समान वास्तविकता एवं सामर्थ्य प्रदान करता है। यह अनहोना है कि पेंटाटुक किसी दुष्टात्मा को इतनी महत्वपूर्ण अस्तित्व प्रदान करेगा।

एक और भी व्याख्या है कि शब्द अज़ाज़ेल विनाश का स्थान है ("कगार"; NEB)। आशय यह है कि बकरे को, लोगों के पाप लिए हुए, उसके विनाश के लिए भेजा जा रहा था। बाद के यहूदी व्यवहार में बकरे को निर्जन स्थान में खुला नहीं छोड़ा जाता था, वरन किसी गहरे गड्ढे की कगार पर से उसे मारने के लिए धकेल दिया जाता था।[17] ऐसा ही एक विचार गौर्डन जे. वैनहैम ने सुझाया था, उन्होंने लिखा कि वह "निर्जन स्थान" जिसमें बकरे को छोड़ा जाता था वास्तव में "काट दिए जाने का स्थान" था, अर्थ यह है कि बकरे को एक "ऐसे स्थान पर ले जाया जाता था जहाँ उसका जीवन 'काट डाला' जाता था।"[18]

अज़ाज़ेल शब्द के विशिष्ट अर्थ के विषय में किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचें, अनुष्ठान का मुख्य बिंदु स्पष्ट है: इस्राएल के पाप पूर्णतः हटा दिए जाते थे। प्रायश्चित के दिन के द्वारा महायाजक के लिए प्रायश्चित, लोगों के लिए प्रायश्चित, निवास-स्थान के लिए प्रायश्चित, वेदी के लिए प्रायश्चित, और छावनी से दोष तथा पाप निर्वासित किए जाते थे।

अंतिम बलिदान: एक होमबलि और एक पापबलि (16:23-28)

[23]तब हारून मिलापवाले तम्बू में आए, और जिस सनी के वस्त्रों को पहने हुए उसने पवित्रस्थान में प्रवेश किया था उन्हें उतारकर वहीं पर रख दे। [24]फिर वह किसी पवित्रस्थान में जल से स्नान कर अपने निज वस्त्र पहन ले, और बाहर जाकर

अपने होमबलि और साधारण जनता के होमबलि को चढ़ाकर अपने और जनता के लिये प्रायश्चित्त करे। 25और पापबलि की चरबी को वह वेदी पर जलाए। 26और जो मनुष्य बकरे को अज़ाज़ेल के लिये छोड़कर आए वह भी अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, और तब वह छावनी में प्रवेश करे। 27और पापबलि का बछड़ा और पापबलि का बकरा भी जिनका लहू पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने के लिये पहुँचाया जाए वे दोनों छावनी से बाहर पहुँचाए जाएँ; और उनका चमड़ा, मांस, और गोबर आग में जला दिया जाए। 28और जो उनको जलाए वह अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, और इसके बाद वह छावनी में प्रवेश करने पाए।"

प्रायश्चित के दिन के अनुष्ठानों का अन्त सामान्य रीति से चढ़ाए गए बलिदानों के साथ होता था। प्रायश्चित के दिन के लिए आवश्यक विशेष चढ़ावों के चढ़ाए जाने के पश्चात, दिन के अनुष्ठान सामान्य रीति से निवास-स्थान में आराधना के लिए चढ़ाए जाने वाले चढ़ावों: होमबलियों और "पापबलि की चर्बी" के साथ पूरे होते थे। महायाजक की "होमबलि" एक मेढ़ा होता था (16:3), और लोगों की "होमबलि" एक और मेढ़ा होता था (16:5)।

आयतें 23-25. इन नियमित चढ़ावों को चढ़ाने से पहले, महायाजक को **अपने वस्त्रों** को फिर से बदलना होता था। उसे **मिलापवाले तम्बू में आकर, और सनी के वस्त्रों को उतारना** होता था जिन्हें उसने **पवित्रस्थान** (महा पवित्रस्थान[19]) में प्रवेश करने के लिए पहना था। साथ ही उसे **किसी पवित्रस्थान में जल से स्नान** करना होता था, संभवतः "मिलाप वाले तम्बू के आंगन में पृथक किए गए विशेष स्थान में।"[20] उसे फिर से अपने पहिरावे को बदलना होता था, और महायाजक की विस्तृत वर्दी पहननी होती थी। वस्त्रों का बदलना प्रायश्चित के दिन की अनुपम गतिविधियों के आरंभ और अन्त होने का चिन्ह था। महायाजक का अनुष्ठानों के आरंभ होने से पहले (16:4) यह करना और फिर अनुष्ठानों के अन्त में (16:23, 24) भी यह करना इस दिन की घटनाओं, जो इस दिन को अन्य पवित्र दिनों से पृथक करती थीं, के लिए पुस्तक के आरंभिक और अंतिम आवरण के समान थे।

वस्त्र बदलने के पश्चात, महायाजक को बलिदान चढ़ाना होता था: अपने लिए एक **होमबलि** तथा एक लोगों के लिए, **प्रायश्चित करने** के लिए। बलिदानों में, जिसमें महायाजक की "पापबलि" के लिए एक बछड़ा (16:3), तथा एक और बकरा होते थे, पापबलि की चरबी भी सम्मिलित होती थी। यह बकरा "यहोवा के लिए" तथा "लोगों के लिए" होता था जिसे "पापबलि" करके चढ़ाया जाता था (16:9, 15)। पापबलि के लिए चढ़ाए जाने वाले दोनों पशु वध किए जा चुके थे; अब, जैसे कि बलिदानों की चरबी से संबंधित निर्देश विशेष रूप से कहते थे, उनकी **चरबी** को **वेदी** पर जलाया जाना होता था, जिसके साथ उस दिन के लिए बलिदान पूरे हो जाते थे।

पापबलि की चरबी का जलाया जाना, अनुष्ठान, जिसके द्वारा छावनी से पाप मिटा दिया जाता था, के पूरे हो जाने के लिए था। होमबलि "प्रायश्चित" करके

परमेश्वर से उसकी आशीषों को लोगों पर पुनः स्थापित करने की माँग करती थी, और उसकी क्षमा के लिए उनके धन्यवाद को भी प्रकट करती थी। इसके साथ ही यह उसके प्रति उनके समर्पण का चिन्ह था - उनकी प्रतिज्ञा कि वे आते वर्ष भर उसे अपना सर्वस्व समर्पित रखेंगे।

आयतें 26-28. इस दिन के निर्देशों का समापन उस वर्णन के साथ होता है जिससे पाप और अशुद्धता को छावनी को दूषित न किए जाने के लिए क्या करना है, बताया गया है। ये नियम एक प्रकार से अंतिम सफाई कार्य करने के लिए थे। सबसे पहले था कि, जिस व्यक्ति ने अज़ाज़ेल को निर्जन स्थान में छोड़ा था **वह अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे**; इसके बाद वह **छावनी** में लौट सकता था (16:26)। उस बकरे के साथ रहने से, जो सांकेतिक रीति से इस्राएल के पाप उठाए हुआ था, वह विधिवत रीति से अशुद्ध हो चुका था; उसे इस अशुद्धता को फैलने से बचाने के लिए स्नान करना होता था। दूसरे, **पापबलि** के लिए प्रयोग किए गए **बछड़े** और **बकरे** की लोथें पूर्णतः जलाई जानी थीं (16:27)। क्योंकि उनका लहू राष्ट्र से और मिलापवाले तम्बू से पाप को धोए जाने के लिए प्रयोग किया गया था, इसलिए उनकी देह दूषित थी। इसलिए उस देह को नष्ट करना था प्रदूषण को फैलने से रोकने के लिए। तीसरे, जो व्यक्ति पशुओं की देह को जलाता था वह ऐसा करने के द्वारा अशुद्ध हो जाता था; इसलिए उसे भी **अपने वस्त्रों को धोने, और जल से स्नान करने** की आवश्यकता था, इससे पहले कि वह शुद्ध हो सकता। इसके पश्चात वह **छावनी** में पुनः प्रवेश कर सकता था (16:28)।

नियमों को चिरस्थायी बनाना (16:29-34)

29"तुम लोगों के लिये यह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने जीव को दुःख देना, और उस दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे निज देश का हो चाहे तुम्हारे बीच रहने वाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम-काज न करे; 30क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा; और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे। 31यह तुम्हारे लिये परमविश्राम का दिन ठहरे, और तुम उस दिन अपने अपने जीव को दुःख देना; यह सदा की विधि है। 32और जिसका अपने पिता के स्थान पर याजक पद के लिये अभिषेक और संस्कार किया जाए वह याजक प्रायश्चित्त किया करे, अर्थात् वह सनी के पवित्र वस्त्रों को पहनकर, 33पवित्रस्थान, और मिलापवाले तम्बू, और वेदी के लिये प्रायश्चित्त करे; और याजकों के और मण्डली के सब लोगों के लिये भी प्रायश्चित्त करे। 34और यह तुम्हारे लिये सदा की विधि होगी कि इस्राएलियों के लिये प्रतिवर्ष एक बार तुम्हारे सारे पापों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए।" यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी हारून ने किया।

यहोवा ने प्रायश्चित के दिन के नियमों का अन्त इस आज्ञा के साथ किया कि

इसे प्रतिवर्ष मनाया जाए। उसने यह भी विशेष निर्देश दिया कि इस दिन को, इस्राएलियों को, व्यक्तिगत रीति से कैसे मनाना है।

आयतें 29-34. अंतिम परिच्छेद का उद्देश्य था अभी जिस दिन का वर्णन किया गया उसे अविरल मनाने के लिए विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाना। ये आयतें इस विशेष दिन के बारे में चार तथ्यों को प्रकट करती हैं।

इसे सदा मनाना था (16:29, 31, 34). लेख बारंबार कहता है कि प्रायश्चित के दिन का मनाया जाना **सदा की विधि** होना था। यह सुनिश्चित करने के लिए कि उस दिन से आगे उसे मनाया जाए, परमेश्वर ने उसके लिए समय तय कर दिया: **सातवें महीने के दसवें दिन**, फसह के पर्व के छः माह के बाद।[21]

इसे विश्राम तथा अपने आप को नम्र करने का दिन होना था (16:29-31). लोगों को मिलने वाला **परमविश्राम** उन्हें दिन के अर्थ पर मनन करने का समय प्रदान करता था (देखें 23:27, 28)। हो सकता है कि राष्ट्र की पापमय दशा और उसकी तुलना में परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में विचार करने के लिए वे प्रोत्साहित किए जाते थे। यह आज्ञा कि **अपने जीव को दुःख देना** सामान्यतः उपवास रखने से संबंधित समझी जाती है (देखें प्रेरितों 27:9)[22], और मूसा की व्यवस्था में केवल यही एक ऐसी आज्ञा मानी जाती है जिसमें उपवास की आवश्यकता थी।[23] "जीव को दुःख देने" में, उपवास के अतिरिक्त, प्रार्थना और अंगीकार का समय भी रहा होगा (देखे दानिय्येल 8:3, 4)।[24]

इसे महायाजक का दायित्व होना था (16:32, 33). यद्यपि ये नियम दिखाते थे कि प्रायश्चित के दिन "हारून" को क्या करना था (16:2), परमेश्वर ने स्पष्ट किया कि उस दिन के लिए महा**याजक** के दायित्व एक से दूसरी पीढ़ी को सौंपे जाने थे (महायाजक से उसके पुत्र को, और फिर उससे उसके पुत्र को, और आगे इसी प्रकार)। परिणामस्वरूप उस दिन के कार्य के लिए महायाजक सदा उपलब्ध होगा। यहोवा द्वारा मूसा और हारून से कहे गए निर्देशों का आने वाले वर्षों में ठीक उसी प्रकार से पालन किया जाना था।

इसे प्रायश्चित संपन्न करने का दिन होना था (16:32-34). इन आयतों में **प्रायश्चित** पर दिया गया बल स्पष्ट करता है कि उस दिन को "प्रायश्चित का दिन" क्यों कहा जाता था। इस परिच्छेद में जिस "प्रायश्चित" के लिए कहा गया है उसमें दोनों, इस्राएल के पापों की क्षमा तथा पवित्र निवास-स्थान, उसकी सामग्री, और वेदी का विधिवत शुद्ध किया जाना सम्मिलित था (देखिए 16:15-19)। परिणामस्वरूप, जब दिन का अन्त होता, और प्रायश्चित हो चुका होता, तो वह क्षमा किए गए लोगों के लिए आनन्द मनाने का दिन होता।

यहोवा के नियम के इस भाग के पूरे हो जाने के पश्चात, पाठक को आश्वस्त किया गया कि मूसा ने परमेश्वर के नियमों का **यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार** पालन किया। अध्याय 16 का आरम्भ एक ऐतिहासिक घटना के उल्लेख के साथ हुआ था (वह पाप और मृत्यु जिससे उन नियमों के दिए जाने का अवसर बना); और अन्त इस सुझाव के साथ होता है कि एक अन्य ऐतिहासिक घटना इन नियमों के दिए जाने के बाद घटित हुई - इस्राएलियों द्वारा प्रायश्चित के दिन का पहली

बार मनाया जाना।

अनुप्रयोग

मसीहियों का "प्रायश्चित का दिन" (अध्याय 16)

प्रायश्चित का दिन मूसा की व्यवस्था का भाग था, और मूसा की व्यवस्था आज लागू नहीं है। क्या नई वाचा के अन्तर्गत रहने वाले मसीही के लिए कोई "प्रायश्चित का दिन" है?

कोई कह सकता है कि हमारा "प्रायश्चित का दिन" गुलगुता पर लगभग दो हज़ार वर्ष पहले हुआ था। वहाँ हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, परमेश्वर के मेमने, की मृत्यु समस्त मानवजाति के पापों के प्रायश्चित के लिए हुई। वे, समस्त मानवजाति के पापों को अपने ऊपर लेकर, पापबलि बनकर मर गए। हम आनन्दित हो सकते हैं कि यीशु ने यह संभव किया कि हमारे पाप हटा दिए गए।

एक अन्य रीति से, हम यह कह सकते हैं कि आज मानवजाति के लिए प्रत्येक दिन एक "प्रायश्चित का दिन" है। पौलुस ने लिखा, "देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है" (2 कुरि. 6:2)। "उद्धार का दिन" बहुत कुछ "प्रायश्चित के दिन" जैसा जान पड़ता है। यह कब होता है? "अभी"! आज! प्रत्येक दिन "उद्धार का दिन" है, क्योंकि प्रति दिन उद्धार उपलब्ध है, उनको, "जो कोई प्रभु का नाम लेगा" (रोमियों 10:13), बाइबल के पद्धति के अनुसार। जिस दिन यीशु ने हमारे पापों के लिए क्रूस पर मर कर प्रायश्चित संभव किया उसी दिन से सभी के लिए उद्धार और प्रायश्चित अनुभव करने का दिन संभव हो गया।

प्रायश्चित का दिन और दैनिक प्रायश्चित (अध्याय 16)

लैव्यव्यवस्था में दिए गए नियम प्रकट कर देते हैं कि विश्वासी इस्राएली को, जब भी वह कुछ गलत करता, अपने पाप के लिए बलि चढ़ानी थी। इसके अतिरिक्त, निवास-स्थान पर पाप के लिए बलिदान दैनिक, साप्ताहिक, और मासिक आधार पर चढ़ाए जाते थे। क्योंकि ये सभी पापबलियाँ नियमित चढ़ाई जाती थीं, और क्योंकि लैव्यव्यवस्था 4 इस्राएलियों को आश्वस्त करता है कि यदि वे परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार उन बलिदानों को चढ़ाएंगे, तो वे क्षमा किए जाएँगे, तो फिर एक सालाना "प्रायश्चित के दिन" की क्या आवश्यकता थी? क्या प्रायश्चित के दिन के आने से पहले लोगों के पाप हटा नहीं दिए गए होते? यद्यपि बाइबल इस प्रश्न का कोई स्पष्ट उत्तर प्रदान नहीं करती है, फिर भी कम से कम दो उत्तर संभव हैं।

एक विचार है कि प्रायश्चित का दिन उन पापों की क्षमा के लिए था जिनकी किसी प्रकार से वर्ष भर में अवहेलना हो गई थी। संभवतः लोगों ने उन पापों पर ध्यान न किया हो या उन्हें भूल गए हों; हो सकता है कि उन्होंने, कभी पाप के रूप में, उन्हें पहचाना ही न हो। उदाहरण के लिए, कोई निवास-स्थान में अशुद्धता की दशा में अनजाने में प्रवेश कर गया हो। प्रायश्चित के दिन को उन पापों के लिए

बनाया गया हो, जिनके लिए पहले कभी बलिदान नहीं चढ़ाए गए थे। यद्यपि यह विचार संभव प्रतीत होता है, तो भी प्रायश्चित के दिन में जितनी व्यापक रीति से पापों की क्षमा मिलती थी, और जिस प्रकार से यह क्षमा मिलती थी, वह इससे अधिक विस्तृत उत्तर की आशा रखता है।

एक दूसरा उत्तर है कि नियमित पापबलि के द्वारा प्राप्त होने वाला दैनिक प्रायश्चित, एक प्रकार की क्षमा तो प्रदान करता था, परन्तु वह अस्थायी, और सशर्त क्षमा होती थी। संभवतः दैनिक बलिदान व्यक्तियों पर से पाप हटा तो देते थे परन्तु उन्हें मिटा नहीं देते थे। वे पाप, शुद्ध किए जाने के स्थान, निवास-स्थान, में एकत्रित होते रहते थे। फिर प्रायश्चित के दिन, विशेष अनुष्ठान, उन "एकत्रित पापों" को लेकर उन्हें पूर्णतः मिटा देते थे।

लोगों के लिए महापवित्र स्थान में चढ़ाई गई पापबलि के द्वारा परमेश्वर का लोगों के दोष को क्षमा कर दिया जाता होगा। जीवित बकरा जिसे राष्ट्र के पापों को उसके सर पर लिए निर्जन स्थान में छोड़ा जाता था, वह भी दिखाता था कि उस दोष के लिए दण्ड को भी हटा दिया गया था। यदि यह दूसरा उत्तर सही है, तो दैनिक प्रायश्चितों को प्रभावी करने के लिए प्रायश्चित का दिन अनिवार्य था।

लहू के द्वारा शुद्ध किए गए (अध्याय 16)

यदि आज हम मनुष्य एक भेड़ या बैल को मारकर और उसके बाद उसे वेदी पर जलाते देखें, तो हम क्या सोचेंगे? हम चिल्लाकर कह सकते हैं "कैसी क्रूरता है!" हालाँकि, यदि हम मूसा के दिनों में इस्राएलियों के बीच और उसके बाद की शताब्दियों जीवन बिताते, तो इस प्रकार का दृश्य एक सामान्य बात होती। मूसा कि अधीनता में प्रचुर मात्रा में पशुओं के बलिदान किए गए। बलिदानों में पशुओं का लहू निरन्तर बहाया जा रहा था। क्यों?

हम चाहे इसे समझ सकें और इसकी व्याख्या कर पाए या नहीं, बाइबल घोषणा करती है कि पुरानी वाचा के अधीन पापों को दूर करने के लिए लहू का बहाया जाना आवश्यक था। इब्रानियों का लेखक, लहू के धब्बों से सनी इन शताब्दियों का सर्वेक्षण करते हुए, इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि मूसा की व्यवस्था: "सच तो यह है कि व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ लहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं, और बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं।" (इब्रा. 9:22) लैव्यव्यवस्था 17:11 लहू से शुद्ध किए जाने के महत्व की बात करता है: "क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित्त होता है।"

इस्राएल एक पवित्र देश था जिसे बलि पशुओं के लहू से शुद्ध किया गया था। आइए हम उनके शुद्धिकरण पर विचार करें और इसके बाद यह सोचें कि हम आज किस प्रकार लहू के द्वारा शुद्ध किए जाते हैं।

इस्राएल को लहू के द्वारा शुद्ध किया गया था

हम इस्राएल के बलिदानों की आवृत्ति और इसके बाद उन बलिदानों के महत्व की जाँच करेंगे।

लहू के बलिदानों की आवृत्ति

इस्राएल देश में व्यक्ति लहू के द्वारा शुद्ध किए जाने पर निर्भर रहते थे। वे विभिन्न प्रकार के बलिदान किया करते थे, और उन सभी में लहू के बलिदान सम्मिलित नहीं होते थे। हालाँकि, वे या तो "दोष बलियाँ" या "पाप बलियाँ" चढ़ाया करते थे। सामान्य तौर पर पाप के लिए चढ़ाई जाने वाली इन बलियों में लहू का बहाना सम्मिलित होता था (देखें 4:27-31)। एक इस्राएली व्यक्ति के लिए उसके पापों की क्षमा के लिए लहू बहाना महत्वपूर्ण था। उस इस्राएली के लिए जिसने पाप किया था उसे उस पाप से क्षमा होने के लिए एक लहू का बलिदान चढ़ाना पड़ता था।[25]

इस्राएल की मण्डली, सम्पूर्ण रूप से शुद्धिकरण के लिए लहू पर निर्भर थी। इसे दूसरे प्रकार से रखने के लिए, इस्राएल को, याजकों के माध्यम से, यहोवा के साथ एक सही सम्बन्ध बनाए रखने के लिए निरन्तर बलिदान चढ़ाते रहना पड़ता था। व्यवस्था यह स्पष्ट करती थी, कि बलिदानों के साथ-साथ, पर्व के इन दिनों पर एक बकरे को पाप बलि के रूप में दिया जाता था:

नए चाँद का पर्व, प्रत्येक महीने का पहला दिन (गिनती 28:11-15);

फसह के पर्व के दिन, पहले महीने के चौदहवें दिन, और इसके बाद आने वाले अखमीरी रोटी के पर्व के सातों दिनों में से प्रत्येक दिन (गिनती 28:16, 17, 22-24);

पहले फलों के दिन में, जो कि पेन्तिकुस्त या सप्ताहों का पर्व है (गिनती 28:26, 30);

तुरहियों के पर्व पर, सातवें महीने के पहले दिन जो यहूदी वर्ष का पहला दिन बन गया (गिनती 29:1, 5) और इसी के फलस्वरूप "रोश होशाना" के रूप में प्रचलित हो गया जिसका अर्थ है "महीने का पहला" या "महीने का प्रधान";

प्रायश्चित्त का दिन, सातवें महीने का दसवां दिन (गिनती 29:7, 11);

सात दिनों के झोंपड़ियों (या तम्बुओं) के पर्व के प्रत्येक दिन, जो सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन आरम्भ होता था (गिनती 29:12, 16, 19, 22, 25, 28, 31, 34, 36)।

इस्राएल देश के पापों की क्षमा के लिए बनाए गया एक पर्व सम्पूर्ण रूप से सातवें महीने के दसवें दिन, एक प्रायश्चित्त का दिन था। इस अवसर का वर्णन लैव्यव्यवस्था 16 में किया गया है। उस दिन, महायाजक इस्राएल के पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए स्वयं अपने पापों के प्रायश्चित्त के लिए एक बछड़े और

लोगों के प्रायश्चित्त के लिए एक बकरे का बलिदान करने के द्वारा प्रायश्चित्त किया करता था। वह इन पशुओं को वेदी पर होमबलि के रूप में जलाता और उनका लहू परमपवित्र स्थान में प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर छिड़का करता था (16:6,11, 14-16)। वह अपने हाथ एक दूसरे बकरे पर रखकर उसे जंगल में छोड़ दिया करता था, जिससे छावनी के पाप दूर हो जाते थे जो बकरे पर रखे गए थे (16:21, 22)। हालाँकि इस रस्म में एक बकरे को छोड़ देना पड़ता था जो अभी जीवित था, फिर भी, उस बछड़े के साथ एक दूसरे बकरे की मृत्यु, इस बात पर बल देती है कि इस्राएल एक ऐसा देश था जिसे लहू के द्वारा शुद्ध किया गया था।

हम यहाँ पर देखते हैं कि, एक नियम के रूप में, एक इस्राएली यदि उस पाप से क्षमा चाहता था जो उसने किया था उसे एक लहू का बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता पड़ती थी। आगे, परमेश्वर के साथ अपने सही आचरण को बनाए रखने के लिए, प्रत्येक महीने के पहले दिन, और वार्षिक तौर पर, और यहूदियों के बड़े पर्वों पर, देश एक साथ मिलकर, लहू के बलिदान चढ़ाया करता था। इनमें फसह का पर्व और अखमीरी रोटी का पर्व और, सप्ताहों का पर्व (पेन्तेकुस्त), तुरहियों का पर्व, और झोंपड़ियों का पर्व सम्मिलित थे। इसके बाद, प्रायश्चित्त के वार्षिक दिन पर, महायाजक बलि पशुओं का लहू लेकर परमपवित्र स्थान में प्रवेश करता था ताकि अपने लिए और सभी लोगों के लिए प्रायश्चित्त कर सके। इस बात में कोई आश्चर्य नहीं है कि नया नियम कहता है कि पुराने नियम के अधीन सभी वस्तुओं को लहू के द्वारा शुद्ध किया जाता था!

लहू के बलिदानों का महत्व

इस बात पर कोई संदेह नहीं कर सकता कि पुराना नियम यह सिखाता है कि पशुओं का लहू इस्राएल के व्यक्तिगत और समस्त रूप से किए गए पापों की क्षमा के लिए आवश्यक था। प्रश्न है "क्यों?" ऐसा क्यों था कि एक व्यक्ति के क्षमा किए जाने और एक देश के शुद्ध किए जाने के लिए एक पशु (या पशुओं) को मरना आवश्यक था? इस प्रश्न के लिए परमेश्वर का उत्तर लैव्यव्यवस्था 17:11 में पाया जाता है: "क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित्त होता है।"

परमेश्वर ने कहा कि, "क्योंकि शरीर का प्राण ... लहू में रहता है।" इसी कारण, जैसे ही पशु को मारा जाता था और लहू को बहाया जाता था, तो उसका प्राण उससे ले लिया जाता था। किसी न किसी प्रकार से, पशु से जीवन को ले लेने का परिणाम एक जीवन को प्राण दान देना था: उस व्यक्ति (या व्यक्तियों) को क्षमा, या प्रायश्चित्त, दे दिया जाता था जिसके स्थान पर पशु को बलि किया जाता था।

पशु के जीवन के लहू के बहाए जाने का परिणाम एक पापी व्यक्ति के लिए जीवन था। कैसे? पशु को पापी व्यक्ति के स्थान पर दण्ड (घात किया जाता था) दिया जाता था; उसे मनुष्य के पापों के लिए दण्ड दिया जाता था। जो व्यक्ति बलि के लिए पशु लेकर आता था वह अपने पापों के लिए मारे जाने के योग्य था, परन्तु

उसके स्थान पर उसकी बजाए पशु मारा जाता था। पापी के लिए प्रायश्चित्त किया गया था, और पाप क्षमा हो गए थे।

जिस प्रकार पाप बलि दी जाती थी उसके सम्बन्ध में एक विवरण इस व्याख्या का प्रमाण देता है। पशु के घात किए जाने से पहले, उसे लाने वाले व्यक्ति "अपना हाथ पापबलि पशु के सिर पर रखे, और होमबलि के स्थान पर पापबलि पशु का बलिदान करे" (4:29)। बलिपशु के सिर पर हाथ रखने के द्वारा वह सांकेतिक तौर पर अपने पाप उसमें हस्तांतरित कर देता था। इसके बाद बलि किए जाने वाला पशु मानो उस पाप का दोषी होता था जो उसके ऊपर हस्तांतरित किया गया था। उसे पापी के स्थान पर घात किया जाता था!

इस प्रकार से, इस्राएल लहू के द्वारा शुद्ध किया जाता था, जिस मृत्यु के योग्य पापी थे उनके स्थान पर पशुओं की मृत्यु के माध्यम के द्वारा। यह तथ्य अन्य कई सत्यों का संकेत देता है: (1) परमेश्वर पाप को गंभीरता से लेता है; जब उसके लोग पाप करते हैं तो उसे बहुत ठेस पहुँचती है। इसी कारण वह पापियों को दोषी ठहरता है। (2) जो पाप करते हैं वे मृत्यु के योग्य हैं; मृत्यु पाप के लिए परमेश्वर के द्वारा दी गई दण्ड की आज्ञा है। पापी परमेश्वर के द्वारा मारे जाने के जोखिम में होते हैं; वे उसके क्रोध के अधीन होते हैं। (3) परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से अपने लोगों के पापों की क्षमा के लिए उपाय ठहराए। (4) यह उपाय, हालाँकि, फिर भी किस वस्तु की मांग करता था जिसे पाप के लिए मरना पड़ता था; इसमें उनके बदले पशुओं की मृत्यु की आवश्यकता थी।[26]

मसीही लहू के द्वारा शुद्ध किया गए हैं

जिस किसी को भी इस बात का मूल ज्ञान है कि नया नियम क्या सिखाता है वह पहले ही यह पहचान चुका है कि इस्राएलियों के शुद्धिकरण के विषय में ये तथ्य, एक सीमा तक, हमारे शुद्धिकरण के लिए भी सत्य बने रहते हैं। बहुत से नए नियम के वाक्यांश इस बात का दावा करते हाँ कि लोग आज मसीह के लहू के बहाए जाने के द्वारा शुद्ध किए जाते हैं (देखें मत्ती 26:28; रोमियों 3:24, 25; 5:8, 9; इफि. 1:7; कुलु. 1:20; 1 पतरस 1:2, 18, 19; प्रका. 7:14)।

इस वाक्य "मसीह का लहू" का अर्थ है मसीह की मृत्यु (देखें 17:11)। चूंकि यीशु का लहू उसकी मृत्यु पर बहा था, यह कहना कि हम उसके लहू के द्वारा बचे हैं यह कहना है कि हम उसकी मृत्यु के द्वारा बचे हैं, या इसके विपरीत है। नया नियम सिखाता है कि हमारा उद्धार, हमारा शुद्धिकरण, यीशु की मृत्यु के माध्यम से आता है, या क्रूस पर बहाए गया उसके लहू के माध्यम से आता है।

निस्संदेह, क्रूस पर यीशु मसीही का बलिदान मूसा की व्यवस्था के अधीन बछड़ों और बकरों के बलिदान से एक *उत्तम बलिदान* था। मसीह का बलिदान कई प्रकार से सर्वश्रेष्ठ था।

1. यह किसी ऐसे व्यक्ति का बलिदान था जो मनुष्य और ईश्वर दोनों था: यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र स्पष्ट तौर पर पशुओं के बलिदान से महान है।

इब्रानियों 9:13, 14 कहता है,

> क्योंकि जब बकरों और बैलों का लहू और कलोर की राख का अपवित्र लोगों पर छिड़का जाना शरीर की शुद्धता के लिये उन्हें पवित्र करता है, तो मसीह का लहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।

2. यह एक स्वेच्छा बलिदान था। पशुओं ने स्वयं को विवेकपूर्ण और स्वेच्छा पूर्वक किसी और के पापों के लिए बलिदान होने के लिए नहीं दिया था, यदि वे उन चाकुओं से बच सकते जिन्होंने उनके जीवनों को समाप्त किया था तो अवश्य बच जाते। इसके विपरीत, यीशु ने कहा, "अच्छा चरवाहा मैं हूँ... . मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूँ। ... कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ।" (यूहन्ना 10:14-18)[27]

3. यह एक पापरहित बलिदान था, बलि पशुओं को निर्दोष होना पड़ता था, या "दोष रहित"; परन्तु एक निर्दोष पशु का बलिदान की तुलना परमेश्वर के पापरहित पुत्र से नहीं की जा सकती। जिस प्रकार महायाजक जो पापों के लिए बलिदान चढ़ाया करता था, "जो पवित्र, और निष्कपट, और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊँचा किया हुआ था" (इब्रा. 7:26)। हमारे महायाजक के द्वारा चढ़ाया गया बलिदान, मुख्यतः, वह स्वयं-था, बाइबल कहती है, "निष्पाप था" (इब्रा. 4:15)।

4. यह एक बार में सबके लिए दिया गया बलिदान था। पापों के लिए पशुओं के लिए बलिदान एक हज़ार वर्ष से अधिक समय तक प्रतिदिन, मासिक तौर पर, और वार्षिक तौर पर चढ़ाए जाते थे। मसीह क्रूस पर एक ही बार मर गया। उसका एक बलिदान स्पष्ट तौर पर व्यवस्था के अधीन किए गए हजारों बलिदानों से श्रेष्ठ था। इब्रानियों की पत्री कहती है कि मसीह, "वैसे भी बहुतों का पाप उठाने के लिए एक बार बलिदान हुआ" (इब्रा. 9:28; देखें 9:12; 10:1-3)।

5. यह पापों को दूर कर सकता था जबकि पुराने नियम के बलिदान ऐसा नहीं कर सकते थे। नए नियम के अनुसार, वे पापों के बलिदान कभी भी पापों को दूर नहीं कर सके। वे "इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा जो प्रतिवर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती।" (इब्रा. 10:1, क्योंकि, "क्योंकि यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे।" (इब्रा. 10:4)। इसके विपरीत, मसीह का बलिदान, "क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है।" (इब्रा. 10:14)। पशुओं के बलिदान पापों को शुद्ध नहीं कर सके; परन्तु मसीह का लहू कर सकता है और करता है!

यह सिद्धान्त लैव्यव्यवस्था के कुछ स्पष्ट वाक्यांशों का विरोध करता प्रतीत होता है जो कहते हैं है कि जो लोग बलिदान चढ़ाते थे वे क्षमा हो गए थे (उदाहरण के लिए, देखें 4:20, 26, 31, 35) ये वाक्यांश इब्रानियों की शिक्षा के साथ किस

प्रकार मेल खा सकते हैं? पाठक को दो सत्यों को स्वीकार करना चाहिए। पहला, इस्राएली क्षमा किए गए थे, जैसा कि लैव्यव्यवस्था कहती है। दूसरा कि, वे पशुओं के लहू की शक्ति के द्वारा क्षमा नहीं किए गए थे, जैसा कि इब्रानियों में संकेत किया गया है। वे इसके बजाए, मसीह के लहू की शक्ति के द्वारा क्षमा किए गए थे, जो "पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए" (इब्रा. 9:15) और इसी के साथ ही जो नई व्यवस्था के अधीन रहते हैं उनके लिए बहाया गया था।

इसी कारण, जब मूसा की वाचा के अधीन लोगों ने उन निर्देशों का पालन किया जो परमेश्वर ने उन्हें पाप के दोष को दूर करने के लिए दिए थे, तो वे मसीह के लहू के द्वारा क्षमा किए गए थे जो एक हज़ार से अधिक वर्ष बाद बहाया गया था।[28] परमेश्वर के लिए, जो भविष्य को जानता है, मसीह का लहू उससे पहले बहाया जा चुका था जब इस्राएली पशुओं के बलिदान चढ़ाया करते थे। इसी कारण, परमेश्वर, मसीह के बलिदान के प्रकाश में, उस इस्राएली के पाप क्षमा कर सका जो एक पशु का बलिदान चढ़ाने के प्रति आज्ञाकारी था। परमेश्वर उसके पाप इसलिए क्षमा नहीं कर रहा था कि पशु के लहू में कोई क्षमता थी, बल्कि इसके बजाए समस्त मानव जाति के द्वारा सभी युगों में किए गए पापों के लिए यीशु मसीह की मृत्यु के कारण।

लहू के द्वारा हमारा उद्धार, एक प्रकार से इस्राएलियों के उसी भाव के समान है, जो प्रारम्भिक तौर पर और इसके बाद लहू के द्वारा *निरन्तर शुद्ध* किए जाते थे। इस्राएल के प्रारम्भिक उद्धार में लहू ने क्या भूमिका निभाई? वे परमेश्वर के पवित्र लोग बन गए थे जब यहोवा ने उन्हें मिस्र से छुड़ाकर बाहर निकाला था। वह छुटकारा एक मसीही के पाप से उद्धार पाने के अवसर से जोड़ा जा सकता है।[29] उनके छुटकारे में दसवीं विपत्ति - पहलौठों की मृत्यु के सम्बन्ध में लहू का बहाया जाना सम्मिलित था। जब विपत्ति आई, तो इस्राएली लहू बहाने के द्वारा मृत्यु से सुरक्षित थे। प्रत्येक परिवार को एक मेमने का लहू बहाने के लिए और उसके लहू को घरों की चौखटों और अलंगो पर लगाने के लिए कहा गया था। परमेश्वर ने उन्हें ये निर्देश फसह के मेमने के सम्बन्ध में दिए थे: "और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लहू तुम्हारे लिए चिन्ह ठहरेगा; अर्थात् मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊँगा, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूँगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नष्ट न होगे" (निर्गमन 12:13)। चूंकि दसवीं विपत्ति ने फिरौन को इस्राएलियों को जाने की अनुमति देने के लिए राज़ी किया था, ऐसा कहा जा सकता है कि लहू के बहाए जाने ने इस्राएल के छुटकारे, या उद्धार में योगदान दिया था।

इसके शीघ्र बाद, जैसा की लैव्यव्यवस्था प्रकट करती है, परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनके पापों से निरन्तर शुद्धिकरण के लिए एक बलिदान की व्यवस्था दी थी। व्यवस्था में बताए गए बलिदानों ने परमेश्वर के लोगों का उद्धार नहीं किया, उनका उद्धार तब हुआ था जब वे मिस्र से छुड़ाकर निकाले गए थे। इसके बजाए, हम कह सकते हैं कि उन बलिदानों ने उनके उद्धार को *बनाए* रखा। उनकी मंशा यह सुनिश्चित करने थी कि वे परमेश्वर के साथ एक सही सम्बन्ध

बनाए रखें, जिसका आनन्द उन्होंने मिस्र से उनके प्रस्थान के बाद से लिया था।

एक तुलनात्मक रूप से, हम आज मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाए जाते हैं। जब नया नियम यह कहता है कि हम उसके लहू के द्वारा बचाए गए हैं (रोमियों 5:8, 9; इफि. 1:7), तो यह आम तौर और हमारे प्रारम्भिक उद्धार का विशेष तौर पर उल्लेख करता है। जब हमारा बपतिस्मा हुआ था, तो हमें पापों की क्षमा मिली (प्रेरितों 2:38), हमारा उद्धार हुआ था (1 पतरस 3:20, 21), और हमारे पाप धो दिए गए थे (प्रेरितों 22:16; इफि. 5:26; तीतुस 3:5) यीशु मसीह के लहू के द्वारा (प्रका. 1:5)। हमारा प्रारम्भिक शुद्धिकरण, इसी कारण, एक भाव से, इस्राएलियों के समान था जो एक मेमने के लहू के द्वारा बचाए गए थे। हम अपने फसह के मेमने - यीशु मसीह "परमेश्वर के मेमने" के द्वारा बचाए गए हैं। पौलुस ने कहा, "क्योंकि हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है" (1 कुरि. 5:7)।

प्रतिदिन, मासिक, और वार्षिक पाप बलियाँ, और प्रायश्चित्त के दिन चढ़ाए गए बलिदान, इस्राएल के उद्धार को बनाए रखने के लिए आवश्यक थे। आज, हम ठीक उसी प्रकार परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले बने रहते हैं जिस प्रकार इस्राएल बना रहता था: पापों की क्षमा के लिए लहू पर निर्भर रहने के द्वारा। हमें परमेश्वर की आशीषें प्राप्त करने के लिए निरन्तर पशुओं को बलि करने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाए, मसीह का लहू हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है। यूहन्ना ने लिखा, "पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)। हमारा प्रारम्भिक शुद्धिकरण केवल लहू बहाए जाने का परिणाम नहीं है, बल्कि हमारा निरन्तर शुद्धिकरण भी मसीह के लहू के बहाए जाने के द्वारा प्राप्त होता है।

लेवीय नियमों के अधीन पाप के लिए बलिदान *प्रतिस्थापन बलिदान* थे। पापी पशु के सिर पर हाथ रखता था, सांकेतिक रूप से अपने पाप पशु में स्थानांतरित करता था। इसके बाद पशु को उस पापी के स्थान पर मार दिया जाता था जो मरे जाने के योग्य था। यह अभ्यास की मंशा निस्संदेह उस बात का एक प्रकार (एक पूर्वावलोकन या छवि) बनने के थी जो आने वाली थी। पापी के लिए पशु के प्रतिस्थापन उस महान वास्तविकता का एक प्रकार था जिसे देखने का हमें सौभाग्य मिला है: पापियों के लिए मसीह (प्रतिरूप) का प्रतिस्थापन जब वह क्रूस पर मरा था।

यह विचार कि मसीह, ख्रीस्त, पापियों के लिए मरेगा यशायाह में पाया जाता है:

> परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; ... कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। ... और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। ... जब वह अपना प्राण दोषबलि करे, ... मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; ... और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा... तौभी उसने बहुतों के पाप

का बोझ उठा लिया, ... (यशा. 53:5-12)।

यीशु ने यह संकेत किया था कि वह पापियों के स्थान पर मरने के लिए आया था। उसने कहा, "जैसे कि मनुष्य का पुत्र; वह इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे" (मत्ती 20:28; देखें 1 तीमु. 2:6)।

पौलुस ने जब यह कहा तो वह मसीह की प्रतिस्थापन वाली मृत्यु के विषय में बात कर रहा था, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ" (2 कुरि. 5:21)। एक बोलने के भाव से, परमेश्वर ने मसीह के ऊपर हाथ रखकर सारी मानवता के पाप उसके ऊपर स्थानांतरित कर दिए। इसके बाद परमेश्वर ने मसीह को क्रूस पर मरने दिया, पापों को दण्ड को सहते हुए जिसका वास्तविक हकदार पापी थे। यीशु मसीह ने हमारे पापों का दोष अपने ऊपर ले लिया और उन पापों के लिए उसे दण्ड दिया गया, ताकि हमें अपने पापों के लिए दण्ड न भोगना पड़े। वह हमारे स्थान पर, हमारे प्रतिस्थापन के रूप में मरा।

उपसंहार

इन महान सच्चाइयों से मिले पाठ आज भी उनके समान हैं जो पुराने नियम के बलिदानों के द्वारा सिखाया गया है। (1) परमेश्वर पाप को गम्भीरता से लेता है। पवित्र होते हुए, उसे पाप का दण्ड निश्चय देना पड़ता है। (2) पाप के लिए उचित दण्ड मृत्यु है (देखें रोमियों 6:23)। (3) परमेश्वर अपने अनुग्रह से हमारे पापों के क्षमा किए जाने के लिए मृत्यु के माध्यम से उपाय भी किया है, यीशु मसीह के लहू के द्वारा, किया है। (4) लहू के द्वारा बचाए जाने के कारण जो परमेश्वर ने अनुग्रह के द्वारा किया है, हमें निश्चय ही कुछ करना चाहिए। प्रारम्भिक तौर पर बचाए जाने के लिए, हमें निश्चय ही सुसमाचार का पालन करना चाहिए। पवित्रशास्त्र उद्धार न पाए हुए व्यक्ति को यीशु में विश्वास करने और पश्चाताप करने की उसकी आज्ञा पालन करने, और परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसका अंगीकार करने, और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने को कहता है। निरन्तर बचे रहने के लिए, मसीहियों को ज्योति में चलने के लिए कहा गया है। जो ये है कि, मसीह के अनुयायी के रूप में, हमें परमेश्वर की आज्ञा का हर बात में पालन करने के लिए अपना सबसे उत्तम करना चाहिए।

यह कहने में कोई विरोधाभास नहीं कि इस्राएल को परमेश्वर के अनुग्रह से बचाया गया था परन्तु इस्राएलियों को यहोवा की आज्ञा पूरा करने के लिए अपना उत्तम प्रयत्न करना चाहिए। इसी के समान ही, यह कहने में कोई विरोधाभास नहीं है कि हम भी अनुग्रह के द्वारा बचाए गए हैं (इफि. 2:8, 9) परन्तु हमें फिर भी कुछ करना पड़ता है। जो अनुग्रह परमेश्वर ने हमें दिया है हमें उसका पूरा लाभ लेने के लिए, अनन्तकाल के लिए बचाए जाने के लिए, हमें निश्चय ही सुसमाचार का पालन करना चाहिए और विश्वासयोग्यता से जीना चाहिए। परमेश्वर का

बचाने वाला अनुग्रह, यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा शुद्ध करते हुए, सभी के लिए उपलब्ध है।

कोय डी. रोपर

समाप्ति नोट्स

[1]वास्तव में लैव्यव्यवस्था के मध्य में अध्याय 14 है, इसके पहले और बाद में, पुस्तक में, समान संख्या में पवित्र-शास्त्र है। [2]जौन ई. हार्टले, "अटोनमेंट, डे ऑफ," *डिक्शनरी ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट: पेन्टाट्यूक*, एड. टी. डेसमंड एलेक्जांडर एण्ड डेविड डब्ल्यू. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय:इन्टरवर्सिटी प्रैस, 2003), 54. [3]इस अध्याय में दी गई जानकारी के अतिरिक्त, प्रायश्चित के दिन का उल्लेख पेन्टाट्यूक में निर्गमन 30:10 और लैव्यव्यवस्था 23:26-32 में भी आता है, "यहोवा के पर्व" (लैव्य. 23:2) के रूप में। यहूदी धर्मगुरुओं के अनेकों अप्रेरित लेख प्रायश्चित के दिन के विषय में हैं। नए नियम में, जब प्रेरितों के काम 27:9 उपवास का उल्लेख करता है तो यह माना जाता है कि वह प्रायश्चित के दिन के लिए है। [4]डब्ल्यू. ई. वाइन, मेर्रिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाईट, जूनियर, *वाईन्स कॉम्प्लीट डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेंट* (नैशविल्ले: थोमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 10. लैव्यव्यवस्था में इसके प्रयोग से प्रकट है कि "प्रायश्चित" अनुष्ठानिक अशुद्धता के हटाए जाने और पापों के हटाए जाने दोनों ही के लिए हो सकता है। [5]इसके लिए NIV कहती है कि "उसे महापवित्र स्थान में वह जब चाहे नहीं आना है।" अन्य अनुवादों में यह भी सम्मिलित है: "[उसे] कभी भी नहीं आ जाना है" (NKJV); "नियुक्त समय के अतिरिक्त ... उसे कदापि प्रवेश नहीं करना है" (REB); और "जब उसे अच्छा लगे उसे नहीं आना है" (NAB)। क्लाईड एम. वुड्स ने टिप्पणी की, "हारून के लिए भी यहोवा की पवित्र उपस्थिति में बिना बुलाए गए या अनुचित रीति से प्रवेश करना मना था" (क्लाईड एम. वुड्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती - व्यवस्थाविवरण*, द लिविंग वे कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट, वोल. 2 [श्रेवेपोर्ट, ला.: लैम्बर्ट बुक हाउस, 1974], 38). [6]बॉब आर. एल्लिस, "मर्सी सीट," *मरसर्स डिक्शनरी ऑफ द बाइबल*, एड. वॉटसन ई. मिल्स (मेकॉन, गा.: मरसर यूनिवर्सिटी प्रैस, 1990), 568. आयत 2 में "दया का आसन" के अन्य अनुवादों में सम्मिलित हैं "सन्दूक के ऊपर का ढक्कन" (REB), "तुष्टिप्रद" (NAB), "प्रायश्चित का ढक्कन" (NIV), और "दया का स्थान" (CEV). [7]"दो मुट्ठी भर" का शब्दार्थ है "हाथों की हथेलियों में भरकर।" [8]जे. एच. हर्ट्ज ने कहा कि "धूप के धुंए का उद्देश्य था एक ऐसा पर्दा बनाना जो महायाजक को पवित्र उपस्थिति पर दृष्टि लगाने से रोके रखे" (जे. एच. हर्ट्ज, *लैव्यव्यवस्था*, द पेंटाट्यूक एण्ड हफ्टोरास [लंडन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1932], 156)। [9]इस अवसर पर जिन चढ़ावों को निर्धारित किया गया है उनकी तुलना पापबलियों से संबंधित अध्याय से की जा सकती है। लैव्यव्यवस्था 4:3 निर्धारित करती है कि यदि महायाजक पाप करता तो उसे "एक निर्दोष बछड़ा" चढ़ाना था। लोगों के प्रधान पुरुष के पापबलि के लिए "निर्दोष बकरा" चढ़ाना था (4:22, 23)। सारी मण्डली के पाप के लिए "एक बछड़े" को चढ़ाना था (4:13, 14)। [10]एंड्रयू एच. ट्रोटर, जूनियर, "अटोन्मेंट," *बेकर थियोलौजिकल डिक्शनरी ऑफ द बाइबल*, एड. वॉल्टर ई. एल्वेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1996), 44.

[11]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राईवर, एण्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हीब्रू एण्ड इंगलिश लेक्सीकौन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लैरेन्डॉन प्रैस, 1977), 736. [12]देखिए गौर्डन जे. वैनहैम, *द बुक ऑफ लैव्यव्यवस्था*, द न्यू इंटरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 233-35. [13]LXX इब्रानी शब्द को यूनानी में परिवर्तित करती है कि "वह जो उठा ले जाता है" और लैटिन वल्गेट में "अज़ाज़ेल" का समतुल्य शब्द है। आज अंग्रेज़ी शब्द "स्केप्गोट" को उसके लिए प्रयोग किया जाता है जिस पर निर्दोष होते हुए भी दोष लगाया जाए। [14]आर. के. हैरिसन ने इस विचार का पक्ष लिया कि शब्द अज़ाज़ेल एक बहुत कम

प्रयोग होने वाला पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ है "हटाना" (आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस [डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1980], 170-71)। [15]वर्तमान के अनेकों अनुवाद इस शब्द का अनुवाद किए बिना उसे संज्ञा के समान प्रयोग करते हैं, "अज़ाज़ेल" (TEV; NJB; NJPSV; REB; NRSV; CEV; NLT; ESV)। इसे CEV यह अनुवाद/व्याख्या देता है: "दुष्टात्मा अज़ाज़ेल को एक भेजा जाएगा।" [16]हार्टले इस विचार को अधिक पसन्द करता था कि "अज़ाज़ेल" दुष्टात्मा का नाम है, परन्तु उसने बल दिया कि वह जीवित बकरा उसके पास तुष्टिकरण के लिए बलिदान बना कर *नहीं* भेजा जाता था। (हार्टले, 59.) [17]मिशनाह *योमा* 6.6. [18]वैनहैम, 233. [19]इस अध्याय में अभिव्यक्ति "पवित्रस्थान" को कभी-कभी मिलापवाले तम्बू के "महापवित्र स्थान" के लिए भी प्रयोग किया गया है (देखिए 16:2, 17 पर टिप्पणियाँ)। मिलापवाले तम्बू (तम्बू) के दो कक्ष थे: (1) एक बाहरी कक्ष, पवित्रस्थान, जिसमें दीवट, भेंटवाली रोटियों की मेज़, और धूप की वेदी थे; और (2) छोटा भीतरी कक्ष, महापवित्र स्थान, जिसमें वाचा का सन्दूक था। दोनों कक्षों को एक परदे के द्वारा पृथक किया गया था; महायाजक पवित्रस्थान से महापवित्र स्थान में इस पर्दे से होकर जाने के द्वारा प्रवेश करता था। [20]हैरिसन, 174. औरों ने सुझाया है कि यह स्नान मिलापवाले तम्बू के सामने, आँगन में रखे हौद में किया जाता था।

[21]सातवें महीने में दो और विशेष पर्व या पवित्र दिन मनाए जाते थे: नरसिंगा फूँकने का पर्व, सातवें महीने के पहले दिन (यहूदियों का नव-वर्ष), और झोंपड़ियों का पर्व, जो सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन आरंभ होता और सात दिन तक चलता रहता (23:23-36)। [22]उदाहरण के लिए देखिए, डॉन डिवेल्ट, *लैव्यव्यवस्था*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिन, मो.: कॉलेज प्रैस, 1975), 270. अपने आप को नम्र करने के साथ उपवास को जुड़ा होना भजन 35:13 और यशायाह 58:3, 5 में है। [23]यह आज्ञा पेंटाट्यूक में अन्य स्थान पर भी दोहराई गई है (लैव्य. 23:27-32; गिनती 29:7)। [24]प्रायश्चित के दिन में अपने आप को नम्र नहीं करने या विश्राम नहीं करने के गंभीर परिणामों के लिए देखिए लैव्यव्यवस्था 23:29, 30. [25]इस नियम में एक छूट को लैव्यव्यवस्था 5:11-13 में पाया जाता है। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि यदि कोई अत्यधिक निर्धन होता था, तो वह दोष बलि के लिए मैदा का एक भाग दे सकता था। [26]इस्राएल के बलिदानों और वे क्यों चढ़ाए जाते थे इसके विषय में अधिक जानकारी के लिए, देखें कोय डी. रोपर, *गिनती*, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री (सर्ची, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2012), 516-24. [27]जब यीशु को गिरफ्तार करके मुकद्दमे के लिए ले जाया गया जो उसकी मृत्यु का कारण रहा, तो उसने यह बात कही कि यदि इससे बचना चाहता तो ऐसा कर सकता था। उसने अपने चेलों से पूछा, "क्या तुम नहीं जानते कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूँ, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा?" (मत्ती 26:53)। [28]प्रचारकों ने कई बार कहा है, "मसीह का लहू आगे बहने के साथ ही पीछे की ओर भी बहा था। इसकी शुद्ध करने की शक्ति उन लोगों के लिए भी उपलब्ध थी जो मसीह से 1, 400 वर्ष पहले जीए थे और उसी प्रकार उन लोगों के लिए भी उपलब्ध है जो मसीह के 2000 वर्ष बाद जीवित हैं।" [29]पौलुस ने इस प्रकार की तुलना 1 कुरिन्थियों 10:1, 2 में की।